मेक्सिको के विद्रोही छात्रों को सलाम !
साथियो! तुम्हारा रास्ता ही हमारा रास्ता है।

शिक्षा और रोजगार के अधिकार से वंचित किये जा रहे गरीबों-मजलूमों के नौजवान बेटे-बेटियों के सामने

एक ही रास्ता--मेक्सिको के छात्रों-नौजवानों का रास्ता

• राकेश कुमार

गुजरी हुई शताब्दी के अन्तिम वर्ष में अनेक ऐसी घटनाएं घटीं, जो पूंजीवादी मीडिया के लिए कोई खास आकर्षण का केन्द्र नहीं बनीं। उन्हें प्रिण्ट मीडिया ने खास तवज्जो नहीं दिया और न ही टी.वी. कैमरे की नजर उनपर टिकी। लेकिन ये घटनाएं ऐसी थीं, जो इस बात का संकेत दे गयी हैं कि इक्कीसवीं सदी के गर्भ में क्या-कुछ पल-बढ़ रहा है। इन घटनाओं में नयी सदी में उठने वाली भीषण सामाजिक उथल-पुथल की कौंध थी। 'इतिहास के अन्त' की घोषणाएं करने वालों की दुनिया के सामने वे प्रति-उद्घोषणाए थीं कि बाजार और मुनाफे की सभ्यता को उसकी माकूल जगह भेजने की लिए इतिहास ताना-बाना बुन रहा है। ऐसी ही घटनाओं में एक घटना थी— मेक्सिको के छात्रों का साम्राज्यवाद के पिठ्ठू अपने शासकों की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ विद्रोह। मेक्सिको के छात्रों का यह विद्रोह हवा के एक तेज झोंके की तरह था, जिसने मेक्सिको की जर्जर शासन-व्यवस्था को हिलाकर रख दिया।

'यूनाम' के प्रदर्शनकारी छात्रों का जुलूस

शिक्षा के बाजारीकरण के खिलाफ तनी मुट्ठियां

लैटिन अमेरिका के उच्च शिक्षा के सबसे बड़े विश्वविद्यालय नेशनल ऑटोनॉमस यूनिवर्सिटी ऑफ मेक्सिको (National Autonomous University of Mescico), जिसे 'यूनाम' के नाम से जाना जाता है, के करीब 2 लाख 80 हजार छात्र-छात्राएं विगत 20 अप्रैल 1999 से अपनी विभिन्न मांगों के समर्थन में अनिश्चितकालीन हड़ताल पर हैं। उच्च शिक्षा में राजकीय सहायता में कटौती करने और सालाना टोकन फीस 2 सेन्ट में 7250 गुने की भयंकर बढ़ोत्तरी कर 145 डालर किये जाने तथा अन्य छात्र विरोधी नीतियों के खिलाफ मेक्सिको सिटी में 23 अप्रैल को जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ जिसमें लगभग एक लाख छात्रों और आम लोगों ने हिस्सा लिया। इसके ठीक दो ही दिन बाद 25 अप्रैल को हड़ताली छात्रों ने यूनाम के प्रशासकीय भवन पर कब्जा कर लिया। उन्होंने यूनाम के टावर पर हड़ताल और संघर्ष के प्रतीक के रूप में लाल और काले बैनर टांग दिये तथा शिक्षा-शुल्कों में हुई बढ़ोत्तरी के खिलाफ नारे लगाये। सड़कों पर मार्च करने के दौरान उनके द्वारा पहने गये टी-शर्टों पर नारे लिखे थे **'एक ही रास्ता-हमारा रास्ता'**। मेक्सिको के ग्यारह अन्य विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राएं भी इस आन्दोलन के साथ एकजुट हो गये। प्रदर्शनकारी छात्र-छात्राओं ने मेक्सिको की आम जनता से 29 अप्रैल को निःशुल्क शिक्षा अधिकारों के बचाव दिवस के रूप में मनाने का आह्वान किया।

भूमण्डलीकरण की समूची नीतियों के खिलाफ थी यह आवाज

छात्रों का यह संघर्ष सिर्फ निःशुल्क शिक्षा के लिए नहीं बल्कि शिक्षा के निजीकरण बाजारीकरण के साथ ही मेक्सिको सरकार की दुष्परिणामी नयी आर्थिक नीतियों के खिलाफ है। मेक्सिको के आन्दोलनरत छात्रों की हड़ताल का सम्बन्ध इससे भी है कि देश की आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था का चरित्र क्या हो ? छात्रों की हड़ताली समिति के घोषणापत्र 'द रोड टू विक्ट्री' में दर्ज छः सूत्री मांगों में मुख्य मांगें हैं- तथाकथिक शैक्षिक ''सुधारों'' को खत्म करके, 1910 में सम्पन्न हुई क्रांति द्वारा अर्जित मुफ्त शिक्षा के अधिकार को प्रदान कर उसे संविधान में सूचीबद्ध किया जाए। 51 वर्षों से विश्वविद्यालय में शिक्षा शुल्क नहीं लगता था, लेकिन इस समय '' 65 डालर प्रति सेमेस्टर लगता है। आम जनता

के ऊपर लदा यह एक भारी खर्च है, जबकि देश में न्यूनतम मजदूरी प्रतिदिन 4 डालर है, देश में प्रति पांच बच्चों में चार बच्चे कुपोषण के शिकार है और अधिकांश नौजवानों सामने शिक्षा पाने की कोई उम्मीद नहीं है। एक मांग यह है कि यूनाम की प्रवेश परीक्षा बाहरी फर्मों से न करायी जाए। इसके साथ ही, हड़ताली छात्रों ने अपने घोषणापत्र में बिजली उद्योग के निजीकरण के प्रस्ताव को वापस लेने की भी मांग की है, उन्होंने बिजली कर्मचारियों से भी हड़ताल में शामिल होने की अपील की।

यूनाम के छात्रों के इस संघर्ष से बौखलाकर मेक्सिको के शासक वर्ग ने छात्रों पर अतिवादी और दुराग्रही होने का आरोप लगाया। जिसके जवाब में संघर्षरत छात्रों ने कहा कि, **''हम मेहनतकशों के बेटे-बेटियों को वे दुराग्रही कह रहें हैं,क्योंकि हम हर एक के अधिकर की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं। यदि ऐसा करना दुराग्रह है, तो ठीक है, हम दुराग्रही हैं।''**

मेक्सिकों के शासक वर्ग ने अभी तो शिक्षा के निजीकरण करने की शुरुआत भर की है। मगर शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ ही आधारभूत उद्योगों-बिजली, सड़क आदि का निजीकरण तेज गति से हो रहा है। साम्राज्यवाद के साये में आई.एम.एफ. व विश्व बैंक की शर्तों को लागू कर भूमण्डलीकरण की नीतियों के तहत निजीकरण-उदारीकरण किया जा रहा है, जिससे कुछ सीमित हाथों में पूंजी का संकेन्द्रण और बाकी भारी आबादी का कंगालीकरण हो रहा है। मेक्सिको की लगभग 90 प्रतिशत आबादी का जीवन स्तर गिरता जा रहा है, महंगाई-बेरोजगारी तेजी से बढ़ रही है पूरा का पूरा मेक्सिकन समाज भयंकर उथल-पुथल का शिकार है। जगह-जगह विरोध, प्रदर्शन हो रहे हैं। किसान, मजूदर, कर्मचारी सभी मेहनतकश वर्ग अपने हकों की लड़ाई के लिए सड़कों पर उतर रहे हैं। यूनाम के छात्रों का वर्तमान आन्दोलन तथा अन्य मेहनतकश वर्गों से उसको मिल रहा सहयोग-समर्थन, मेक्सिको में गहराते आर्थिक संकट के खिलाफ आम आबादी के बढ़ते असंतोष और उससे मुक्ति की छटपटाहट

अपने हक-हूकूक के लिए
ईरान के छात्रों ने भी आवाज बुलन्द की

जहां जुल्म है, वहां इन्साफ की लड़ाई भी है। इस हकीकत को ईरान के बगावती छात्रों ने पिछले साल जुलाई में हुए जबर्दस्त आन्दोलन में चरितार्थ कर दिया। विद्रोही छात्रों ने बेरोजगार नौजवानों और आम लोगों के साथ सड़कों पर विरोध प्रदर्शन कर पुलिस तथा सरकार से लड़ाई लड़ी। छात्रों का यह विद्रोह इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान के शासक वर्गों की नीतियों के खिलाफ संघर्ष के रूप में सामने आया।

8 जुलाई 1999 को शुरू होकर छह दिनों तक चला छात्रों का यह आन्दोलन तेहरान विश्वविद्यालय से शहर की सड़कों पर और फिर देश के अन्य भागों में भी फैल गया। बगावती छात्र 'सलाम' अखबार की बन्दी और प्रेस की सेंसरशिप के खिलाफ-विशेष रूप से आक्रोश में थे। लेकिन उनकी बगावत उनके दिलों में सुलगते गुस्से और ईरान के आम अवाम के असंतोष को जाहिर करती है। भयंकर गरीबी और बेरोजगारी से ईरान के सिर्फ सबसे गरीब तबके ही नहीं, बल्कि मध यवर्ग भी परेशान हाल है। कठमुल्ला शासकों और उनके धार्मिक कानूनों के दमनकारी शासन से, भारी आबादी कुपोषण और भुखमरी की शिकार है। इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान की नारी विरोधी विचारधारा और मध्युगीन पितृसत्तात्मकता के खिलाफ महिलाएं भी बगावत कर रही हैं।

8 जुलाई को तेहरान विश्वविद्यालय के लगभग 200 छात्रों ने अपनी मांगों के समर्थन में शांतिपूर्वक प्रदर्शन किया। अधिकारियों ने उनकी मांगों के सम्बन्ध में कोई प्रतिक्रिया नहीं की, बल्कि उल्टे 9 जुलाई की सुबह दंगारोधी पुलिस (दंगाई पुलिस) ने प्रदर्शनकारी छात्रों के ऊपर बर्बरतापूर्वक हमला कर कुछ छात्रों की हत्या कर दी तथा बहुतों को गिरफ्तार कर लिया। इस बर्बर हमले ने कैम्पस के सारे छात्रों को सड़कों पर उतरने के लिए उत्तेजित कर दिया। इससे घबराकर ईरान के उच्चाधिकारियों ने सुरक्षात्मक रुख अख्तियार कर लिया। राष्ट्रपति खतामी और ईरान के 'सुप्रीम लीडर' अयातुल्ला खमेनी ने घड़ियाली आंसू बहाते हुए छात्रों के आन्दोलन को समर्थन देने की घोषणा और पुलिस द्वारा छात्रों पर बर्बरतापूर्वक हमला करने की भर्त्सना की। लेकिन ईरान के बगावती छात्र शासकों की घड़ियाली आंसुओं के पीछे छिपी असलियत को समझ चुके थे, वे इन बातों के भुलावे में नहीं आये।

12 जुलाई को तेहरान विश्वविद्यालय में प्रदर्शनकारी छात्रों की पुलिस से झड़पें हुईं और शहर में अन्य जगहों पर भी। ईरान के अन्य मुख्य शहरों में आन्दोलन के फैल जाने से इसमें महत्वपूर्ण इजाफा हुआ। तेहरान के छात्रों से प्रेरणा लेकर, 11 जुलाई को तबरिज के छात्र भी अन्य लोगों के साथ सड़कों पर उतर पड़े। अब, ईरान के शासक पैंतरा बदलकर छात्रों के आन्दोलन के समर्थन देने के अपने बयान से मुकर गये और छात्रों को ''डाकू'' तथा ''विध्वंसकारी'' बताते हुए उन्हें देश की ''राष्ट्रीय सुरक्षा'' के लिए खतरा बताने लगे। उच्चाधिकारियों ने लोगों को 'और प्रदर्शन न करने' की चेतावनी दी। पाबंदी को चुनौती देते हुए भारी संख्या में छात्र तेहरान विश्वविद्यालय के सामने इकठ्ठा हुए – और आम लोगों ने उनका साथ दिया। दोपहर में दंगाई पुलिस ने उन पर हमला कर दिया। बहुत से छात्र जख्मी हुए और गिरफ्तार कर लिये गये। लेकिन

(अगले पृष्ठ पर जारी)